Research Paper
E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

आशीष गोदारा सहायक आचार्य (भूगोल), राजकीय महाविद्यालय, श्रीकरणपुर, जिला गंगानगर, राजस्थान.

ABSTRACT:

"ग्लोबल साउथ" शब्द मुख्य रूप से अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, एशिया और कैरिबियन के कुछ हिस्सों में स्थित देशों के समूह को संदर्भित करता है, जो अक्सर कम आय स्तर, विकासशील अर्थव्यवस्थाओं और राजनीतिक और सामाजिक चुनौतियों की अलग-अलग डिग्री की विशेषता रखते हैं। यह अवधारणा "ग्लोबल नॉर्थ" के विपरीत उभरी, जिसमें आम तौर पर धनी, औद्योगिक राष्ट्र शामिल होते हैं।ग्लोबल साउथ में संस्कृतियों, भाषाओं और राजनीतिक प्रणालियों की एक विविध श्रेणी शामिल है, लेकिन इस श्रेणी के कई देश उपनिवेशवाद, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक असमानता जैसे सामान्य अनुभव साझा करते हैं। हाल के वर्षों में, वैश्विक गतिशीलता को आकार देने में ग्लोबल साउथ देशों की क्षमता और एजेंसी पर जोर दिया गया है, खासकर जलवायु परिवर्तन, प्रौद्योगिकी और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों जैसे क्षेत्रों में।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, ग्रीन हाउस गैस, उपनिवेशवाद, जलवायु परिवर्तन।

परिचय-

"ग्लोबल साउथ" शब्द का प्रयोग अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, एशिया महाद्वीप और मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों के देशों को संदर्भित करता है, जो अक्सर ग्लोबल नॉर्थ के देशों की तुलना में औद्योगीकरण, आय और मानव विकास के निचले स्तरों की विशेषता रखते हैं। इसमें मानवीय संस्कृतियों, अर्थव्यवस्थाओं और राजनीतिक प्रणालियों की एक अलग श्रेणी को शामिल किया जाता है।

ग्लोबल साउथ की विशेषताएँ-

आर्थिक दृष्टिकोण से कई ग्लोबल साउथ देश गरीबी, आय असमानता और अविकसितता से संबंधित चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, हालाँकि उनके बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं। ग्लोबल साउथ के कई देशों में उपनिवेशवाद का इतिहास है, और उनके राजनीतिक परिदृश्य उपनिवेशवाद के बाद, शासन के मुद्दों और वैश्विक शक्ति गतिशीलता जैसे कारकों से प्रभावित हैं। ग्लोबल साउथ के ये देश अक्सर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुँच, उच्च बेरोजगारी दर और लैंगिक असमानता जैसे सामाजिक मुद्दों से जूझते हैं। भौगोलिक कारकों, सीमित संसाधनों और कम अनुकूलन क्षमताओं के कारण कई वैश्विक दक्षिण राष्ट्र जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। वैश्विक दक्षिण संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं की एक समृद्ध ताने-बाने का घर है, जो इसकी जटिलता और लचीलेपन में योगदान देता है। वैश्विक मामलों में पारंपरिक रूप से हाशिए पर रहने के बावजूद, वैश्विक दक्षिण के देश अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपने प्रभाव का दावा कर रहे हैं।आर्थिक विकास, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक न्याय सहित वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने के लिए वैश्विक दक्षिण की गतिशीलता को समझना महत्वपूर्ण है।

पिछली शताब्दी से पृथ्वी की औसत सतह का तापमान बढ़ रहा है। 2021 में प्रकाशित आईपीसीसी की छठी आकलन रिपोर्ट में पाया गया कि पूर्व-औद्योगिक काल (1750 से शुरू) के बाद से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन ने जलवायु को लगभग 2 डिग्री फ़ारेनहाइट (1.1 डिग्री सेल्सियस) तक गर्म कर दिया है। अगले कुछ दशकों में वैश्विक औसत तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस (लगभग 3 डिग्री फ़ारेनहाइट) तक पहुंचने या उससे अधिक होने की उम्मीद है। ये परिवर्तन पृथ्वी के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करेंगे। (IPCC, 2021)

ग्रीन हाउस गैसों की वृद्धि से तीव्र गर्मी की लहरों, सूखे, तूफान, भारी वर्षा की घटनाओं और बाढ़ का जोखिम बढ़ा है। मौसम की ये चरम घटनाएं समुदायों और पारिस्थितिक तंत्र को महत्वपूर्ण नुकसान पहुंचाती हैं। दुनिया भर में 44% आपदाएँ बाढ़ से और 17% उष्णकटिबंधीय चक्रवातों से जुड़ी हुई हैं। मानव हानि के संबंध में उष्णकटिबंधीय चक्रवात और सूखा सबसे प्रचलित खतरे थे, जो 1970 से 2019 तक क्रमशः 38% और 34% आपदा संबंधी मौतों के लिए जिम्मेदार थे। आर्थिक नुकसान के संदर्भ में 38% उष्णकटिबंधीय चक्रवातों तथा विभिन्न प्रकार की बाढ़ 31% के लिए जिम्मेदार थी। (WMO. 2021)

जलवायु परिवर्तन मौसमों के समय को प्रभावित कर रहा है, जिसमें वसंत का पहले आगमन, पतझड़ ऋतु का बाद में लौटना और वृक्षों पर फूल आने जैसी प्राकृतिक घटनाओं के समय में बदलाव शामिल हैं। वर्षा की आवृत्ति और तीव्रता में परिवर्तन हो रहा है। कुछ क्षेत्रों में अधिक बार और तीव्र वर्षा होती है, जबकि अन्य क्षेत्रों को लंबे समय तक सूखे का सामना करना पड़ता है। वैश्विक औसत सतह तापमान के प्रति 1°C वृद्धि के कारण वैश्विक वर्षा की मात्रा में 1-2% की वृद्धि हो जाती हैं। (Trenberth, K. E. 2011)

ग्रीन हाउस गैसों में से एक कार्बन डाइऑक्साइड की सांद्रता बढ़ने से सतही महासागरीय जल का pH 0.1 pH यूनिट तक गिर गया है। यह बहुत ज्यादा नहीं लग सकता है, लेकिन यह परिवर्तन अम्लता में लगभग 30 प्रतिशत वृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। (NOAA, 2023) जलवायु परिवर्तन वैश्विक दक्षिण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, जिससे मौजूदा कमज़ोरियाँ और चुनौतियाँ और भी बढ़ जाती हैं। मुख्य प्रभावों में शामिल हैं:

1. कृषि व्यवधान- ग्लोबल साउथ के कई क्षेत्र कृषि पर बहुत अधिक निर्भर हैं, जो बदलते वर्षा पैटर्न, चरम मौसम और कीटों और बीमारियों में वृद्धि से खतरों का सामना करते हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा ख़तरे में पड़ जाती है।तापमान में परिवर्तन: बढ़ते तापमान से फसलों में गर्मी का तनाव हो सकता है, जिससे पैदावार कम हो सकती है और विकास चक्र प्रभावित हो सकता है।वर्षा पैटर्न: वर्षा में परिवर्तन से सूखा या बाढ़ आ सकती है, जिससे फसल उत्पादन को खतरा हो सकता है। अनियमित मौसम पैटर्न किसानों के लिए योजना बनाना कठिन बना देता है। कीट और रोग दबाव: गर्म तापमान और बदलती जलवायु कीटों और बीमारियों की सीमा और जीवन चक्र का विस्तार कर सकती है, जिससे कीटनाशकों की आवश्यकता बढ़ जाती है और फसल स्वास्थ्य प्रभावित होता है। मिट्टी का क्षरण: बढ़ता हुआ कटाव, मिट्टी की उर्वरता का नुकसान और मिट्टी की नमी में बदलाव कृषि उत्पादकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।जल संसाधन: पानी की बदलती उपलब्धता सिंचाई प्रथाओं को प्रभावित कर सकती है, जिससे कृषि, औद्योगिक और आवासीय उपयोगों के बीच पानी के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है। फसल व्यवहार्यता: कुछ क्षेत्र पारंपरिक फसलों के लिए अनुपयुक्त हो सकते हैं, जबकि खेती के लिए नए क्षेत्र खुल सकते हैं, जिससे फसल चयन और खेती के तरीकों में बदलाव की आवश्यकता होगी। आर्थिक प्रभाव: फसल की पैदावार में उतार-चढ़ाव से कीमतों में वृद्धि और खाद्य असुरक्षा हो सकती है, जिससे किसानों की आजीविका और वैश्विक खाद्य प्रणाली प्रभावित हो सकती है।

2. पानी की कमी- वर्षा में बदलाव और ग्लेशियरों के पिघलने से मीठे पानी की उपलब्धता कम हो जाती है, जिससे पीने के पानी और सिंचाई पर असर पड़ता है। ग्लोबल साउथ के विभिन्न देशों के स्थायी हिम क्षेत्रों के संकुचित होने से इस समस्या का ओर भी गंभीर होने

का खतरा है।

3. स्वास्थ्य जोखिम - बढ़ते तापमान और चरम मौसम की घटनाएँ स्वास्थ्य समस्याओं में योगदान करती हैं, जिसमें गर्मी से संबंधित बीमारियाँ और वेक्टर जनित बीमारियाँ शामिल हैं।यूनिसेफ के अनुसार दुनिया के एक अरब से एक ज्यादा बच्चों पर जलवायु परिवर्तन से खतरा मंडरा रहा है । भारत , पाकिस्तान , बंगलादेश और अफगानिस्तान पर जलवायुपरिवर्तन का संकट सबसे अधिक है । यूनिसेफद्वारा बच्चों पर केन्द्रित क्लाइमेट रिस्क इंडैक्स भी जारी किया गया है , जिसमें देशों को जलवायु परिवर्तन के मामले सबसे ज्यादा जोखिम वाले देशों में शामिल किया गया इन जोखिमों में बाढ़ , वायु प्रदूषण , चक्रवात और लू शामिल हैं । क्लाइमेट रिस्क इंडैक्स में बच्चों जलवायु व पर्यावरण संबंधी खतरों के जोखिम उनसे बचाव व आवश्यक सेवाओं तक उनकी पहुंच के आधार पर देशों को क्रमबद्ध किया गया है दुनिया के एक अरब से ज्यादा बच्चे जलवायु परिवर्तन के उच्च जोखिम वाले 33 देशों में रहते हैं । अनुमान है कि जैसे - जैसे जलवायु परिवर्तन का असर बढ़ेगा वैसे - वैसे बच्चों का यह जोखिम और बढ़ता जाएगा यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस प्रगतिशील दौर में एक तरफ बच्चे अनेक बीमारियों के कारण मौत के मुंह में समा रहे हैं तो दूसरी तरफ विभिन्न विसंगतियों के चलते बच्चों के बचपन पर एक बड़ा खतरा मंडरा रहा है ।

4. आर्थिक चुनौतियाँ- विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ अक्सर जलवायु प्रभावों के प्रति कम लचीली होती हैं, जिससे गरीबी और बेरोज़गारी बढ़ती है क्योंकि उद्योग अनुकूलन के लिए संघर्ष करते हैं।ग्लोबल साउथ में आर्थिक परिवर्तन वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव सहित विभिन्न कारकों द्वारा आकार लिया गया है। अर्थव्यवस्थाओं का विविधीकरण: कई देश कुछ वस्तुओं पर निर्भरता से दूर जा रहे हैं और विनिर्माण, सेवाओं और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में विविधता ला रहे हैं। डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं का उदय: प्रौद्योगिकी को तेजी से अपनाने से डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा मिल रहा है, खासकर केन्या और भारत जैसे देशों में ई-कॉमर्स और तकनीकी स्टार्टअप में वृद्धि हुई है। विदेशी निवेश: विशेष रूप से चीन और अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में उछाल आया है, जिसने बुनियादी ढांचे और उद्योगों को विकसित करने में मदद की है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव: आर्थिक परिवर्तन तेजी से पर्यावरणीय चिंताओं से प्रभावित हो रहे हैं, तथा कई देश नवीकरणीय ऊर्जा और टिकाऊ प्रथाओं में निवेश कर रहे हैं।

5. प्रवास- जलवायु से संबंधित आपदाएँ और बदलते वातावरण समुदायों को पलायन करने के लिए मजबूर कर सकते हैं, जिससे सामाजिक और राजनीतिक तनाव पैदा हो सकता है।जलवायु परिवर्तन विभिन्न तंत्रों के माध्यम से वैश्विक दक्षिण में प्रवास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है: पर्यावरणीय क्षरण: समुद्र का बढ़ता स्तर, चरम मौसम की घटनाएँ और रेगिस्तानीकरण समुदायों को अपने घर छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं। उदाहरण के लिए, बांग्लादेश जैसे निचले इलाकों वाले देशों में भयंकर बाढ़ आती है। संसाधनों की कमी: सूखे और बदलते मौसम के पैटर्न कृषि उत्पादकता को कम करते हैं, जिससे खाद्य असुरक्षा होती है। यह किसानों और ग्रामीण आबादी को बेहतर अवसरों की तलाश में शहरी क्षेत्रों या अन्य देशों में पलायन करने के लिए मजबूर कर सकता है। जैसे-जैसे जलवायु प्रभावों के कारण आजीविका अस्थिर होती जाती है, आर्थिक अस्थिरता पलायन को बढ़ावा देती है। कई लोग अधिक स्थिर क्षेत्रों या देशों में रोजगार की तलाश करते हैं। सामाजिक व्यवधान: जलवायु परिवर्तन संसाधनों को लेकर मौजूदा सामाजिक तनाव और संघर्षों को बढ़ाता है, जिससे मजबूरन पलायन हो सकता है। स्वास्थ्य जोखिम: बढ़ता तापमान और चरम मौसम स्वास्थ्य संकट में योगदान करते हैं, जिससे लोग सुरक्षित वातावरण की तलाश में पलायन को बढ़ावा देते हैं।

6. जैव विविधता का नुकसान- जलवायु परिवर्तन के कारण पारिस्थितिकी तंत्र को खतरा है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर आजीविका प्रभावित होती है।जलवायु परिवर्तन आवास की हानि, परिवर्तित पारिस्थितिकी तंत्र और प्रजातियों के विलुप्त होने के माध्यम से जैव विविधता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। बढ़ते तापमान और बदलते वर्षा पैटर्न उन आवासों को बाधित करते हैं जिन पर कई प्रजातियाँ निर्भर करती हैं, जिससे उन्हें पलायन या अनुकूलन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उदाहरण के लिए, कोरल रीफ गर्म महासागर के तापमान के कारण विरंजन से पीड़ित हैं। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन जीवन चक्र की घटनाओं, जैसे प्रजनन और भोजन की उपलब्धता के समय में बेमेल पैदा कर सकता है, जिससे प्रजातियों का अस्तित्व प्रभावित होता है। आक्रामक प्रजातियाँ बदली हुई परिस्थितियों में पनप सकती हैं, जिससे देशी जैव विविधता को और अधिक खतरा हो सकता है। कुल मिलाकर, इन परिवर्तनों के संयुक्त प्रभाव से आनुवंशिक विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के लचीलेपन में कमी आ सकती है।

7. बुनियादी ढांचे की कमजोरी- खराब बुनियादी ढांचे के कारण कई क्षेत्र बाढ़, तूफान और अन्य जलवायु-संबंधी घटनाओं से होने वाले नुकसान के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।चरम मौसमी घटनाएँ: तूफ़ान, बाढ़ और गर्मी की लहरों की बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता सड़कों, पुलों और इमारतों को नुकसान पहुँचा सकती है, जिससे महंगी मरम्मत और व्यवधान हो सकते हैं। समुद्री जल स्तर में वृद्धि: तटीय अवसंरचना जोखिम में है क्योंकि बढ़ते समुद्र स्तर बंदरगाहों, सड़कों और शहरी क्षेत्रों को खतरे में डालते हैं, जिससे समुद्री दीवारें या स्थानांतरण जैसे महंगे अनुकूलन की आवश्यकता होती है। जल आपूर्ति प्रणाली: वर्षा के पैटर्न में परिवर्तन जल आपूर्ति प्रणालियों पर दबाव डाल सकते हैं, जिससे कमी या संदूषण हो सकता है, जिसके लिए जल प्रबंधन और वितरण में उन्नयन की आवश्यकता होती है। ऊर्जा अवसंरचना: बढ़ते तापमान से ऊर्जा की मांग बढ़ सकती है, साथ ही बिजली उत्पादन की दक्षता पर भी असर पड़ सकता है, खासकर थर्मल प्लांट के लिए। अवसंरचना को अधिक परिवर्तनशील नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के अनुकूल होने की आवश्यकता हो सकती है। परिवहन नेटवर्क: गर्मी के कारण रेल की पटरियाँ मुड़ सकती हैं, और भारी वर्षा से भूस्खलन और सड़कें बह सकती हैं, जिससे पारगमन प्रणाली और पहुँच प्रभावित होती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली: गर्मी और प्रदूषण के बढ़ते स्तर से स्वास्थ्य सेवा सुविधाएँ और सेवाएँ प्रभावित हो सकती हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन से संबंधित बढ़ती स्वास्थ्य समस्याओं को समायोजित करने के लिए सुधार की आवश्यकता होती है।

आर्थिक प्रभाव: बुनियादी ढांचे को नुकसान से आर्थिक गतिविधियां बाधित हो सकती हैं, उत्पादकता प्रभावित हो सकती है तथा व्यवसायों और सरकारों की लागत बढ़ सकती है।

निष्कर्ष

निम्न और मध्यम आय वाले देशों से मिलकर बना वैश्विक दक्षिण, जलवायु परिवर्तन से असमान रूप से प्रभावित है। □अफ्रीका और दक्षिण एशिया में सूखा और पानी की कमी,□छोटे द्वीप विकासशील राज्यों (एसआईडीएस) में समुद्र-स्तर में वृद्धि और तटीय कटाव,□लैटिन अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया में वनों की कटाई और भूमि क्षरण,□प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति और गंभीरता (जैसे, तूफान, बाढ़),□कृषि को प्रभावित करने वाले वर्षा पैटर्न में परिवर्तन,□फसल विफलताओं और कम पैदावार के कारण खाद्य असुरक्षा और कुपोषण, □बढ़ता हुआ प्रवास और विस्थापन (जैसे, जलवायु शरणार्थी),□गर्मी के तनाव, मलेरिया और अन्य जलवायु-संवेदनशील बीमारियों के कारण उच्च मृत्यु दर,आजीविका और आय का नुकसान, खास तौर पर छोटे किसानों और मछुआरों के लिए व □□जलवायु-संबंधी विस्थापन के कारण सांस्कृतिक विरासत और पहचान का नुकसान आदि । ग्लोबल साउथ को तत्काल जलवायु कार्रवाई की आवश्यकता है, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी, जलवायु वित्त में वृद्धि, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण, जलवायु-लचीला बुनियादी ढाँचा विकास तथा जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और लचीलापन प्रयासों के लिए सहायता।

REFERENCES

1. Hickel, Jason; Sullivan, Dylan; Zoomkawala, Huzaifa (2 November 2021). "Plunder in the Post-Colonial Era: Quantifying Drain from the Global South Through Unequal Exchange, 1960–2018". *New Political Economy*. **26** (6): 1030–1047. doi:10.1080/13563467.2021.1899153. S2CID 233600773.

2. "South-South Cooperation" (PDF). United Nations Development Programme. Archived from the original (PDF) on 19 September 2015.

3. "United Nations Office for South-South Cooperation". United Nations Development Programme. Archived from the original on 3 December 2012.

4. Acharya, Amitav (3 July 2016). "Studying the Bandung conference from a Global IR perspective". *Australian Journal of International Affairs*. **70** (4): 342–357. doi:10.1080/10357718.2016.1168359. S2CID 156589520.

5. Gray, Kevin; Gills, Barry K. (2 April 2016). "South–South cooperation and the rise of the Global South". *Third World Quarterly*. **37** (4): 557–574. doi:10.1080/01436597.2015.1128817.

6. Collyer, Fran M. (March 2021). "Australia and the Global South: Knowledge and the Ambiguities of Place and Identity". *Journal of Historical Sociology*. **34** (1): 41–54. doi:10.1111/johs.12312. S2CID 233625470.

7. Moosavi, Leon (15 February 2019). "A Friendly Critique of 'Asian Criminology' and 'Southern Criminology'". *The British Journal of Criminology*. **59** (2): 257–275. doi:10.1093/bjc/azy045.

8. Thomas-Slayter, Barbara P. (2003). *Southern Exposure: International Development and the Global South in the Twenty-First Century*. United States: Kumarian Press. p. 11. ISBN 978-1-56549-174-8.

9. Oglesby, Carl (1969). "Vietnamism has failed ... The revolution can only be mauled, not defeated". *Commonweal*. **90**.

10. Pagel, Heikie; Ranke, Karen; Hempel, Fabian; Köhler, Jonas (11 July 2014). "The Use of the Concept 'Global South' in Social Science & Humanities". Humboldt University of Berlin. Retrieved 6 October2016.

11. Tomlinson, B.R. (April 2003). "What was the Third World?". *Journal of Contemporary History*. **38** (2): 307–309. doi:10.1177/0022009403038002135. S2CID 162982648.

12. Dados, Nour; Connell, Raewyn (February 2012). "The Global South". *Contexts*. **11** (1): 12–13. doi:10.1177/1536504212436479. S2CID 60907088.

13. Cox, Robert W. (Spring 1979). "Ideologies and the New International Economic Order: Reflections on Some Recent Literature". *International Organization*. **33** (2): 257–302. doi:10.1017/S0020818300032161. JSTOR 2706612. S2CID 144625611.

14. Stettner, Walter F. (Spring 1982). "The Brandt Commission Report: A Critical Appraisal". *International Social Science Review*. **57** (2): 67–81. JSTOR 41881303.

15. Litonjua, M. D. (22 March 2012). "Third World/Global South: From Modernization, to Dependency/Liberation, to Postdevelopment". *Journal of Third World Studies*. **29** (1): 25–57. JSTOR 45194852. OCLC 8512965654. Gale A302297493.

16. Kassi, Affo Kassi (27 May 2021). *From German Colonialism in the 19th Century to Two Germanies Africa Policies in ACP Context and Beyond*. GRIN Verlag. p. 25. ISBN 978-3-346-41210-2.

17. Lees, Nicholas (January 2021). "The Brandt Line after forty years: The more North–South relations change, the more they stay the same?". *Review of International Studies*. **47** (1): 85–106. doi:10.1017/S026021052000039X.